तरुण विजय

उत्तराखण्ड की धरती में जन्मे, पले, बढ़े, शिक्षित और विवाहित तरुण विजय हिमालय की स्वाभिमानी धरती के सच्चे प्रतीक हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन गढ़वाल के चप्पे–चप्पे में घूमकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य करने एवं अपनी बैरागी लेखनी से उत्तराखण्ड के दर्द और संवेदनाओं को दुनियाभर में पहुंचाने का कार्य किया।

उन्होंने आपातकाल में लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए संघर्ष किया और स्थानीय 'वाणी परिषद' संस्था बनाकर कॉलेज विद्यार्थियों और नगर के बुद्धिजीवियों को एक ऐसा मंच दिया जिसकी सुगन्ध आज भी व्याप्त है। कॉलेज जीवन में ही उन्होंनें राजपुर के पास गढ़वाल के गरीब छात्रों के लिए विद्यालय खोला। देहरादून में गरीब विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क छात्रावास और ट्यूशन की व्यवस्था की एवं उत्तराखण्ड निर्माण के संघर्ष में अपनी कलम का धर्म निभाते हुए बर्बर सत्ता के विरुद्ध जनचेतना का ज्वार जागृ त किया। उस समय की उनकी लिखी हुई कविताएं और लेख उत्तराखण्ड संघर्ष की बौद्धिक पृष्ठभूमि का हिस्सा बना। ठीक वैसे ही जैसे एक गिलहरी अपनी शरीर पर रेत के कण लेकर राम सेतु निर्माण में सहयोग देती थी।

उत्तराखण्ड में विश्व के श्रेष्ठतम विकास और ढांचागत सुविधाएं लाने के लिए कृतसंकल्प तरुण विजय गढ़वाल के बेटे हैं और वे उत्तराखण्ड के युवाओं को नवीन चेतना, ऊर्जा और संगठन की दिशा देने में समर्थ हैं। उनका परिवार और समस्त सम्बन्धी उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों, विशाल हिमालय परिवार के अंगभूत घटक हैं। उत्तराखण्ड से जीवनभर का नाता रखने वाले तरुण विजय यहां की सांस्कृतिक धरोहर के प्रहरी हैं। यहां से होकर गुजरने वाली कैलाश मानसरोवर यात्रा पर उन्होंने देश की सर्वश्रेष्ठ गिनी जाने वाली पुस्तक लिखी है, जिसका भारत की चार भाषाओं में अनुवाद है। उन्होंने देहरादून में उत्तराखण्ड के वीरनायकों की स्मृति को समर्पित कीर्तिमंदिर (Hall of Fame) को स्थापित करने का बेड़ा उठाया है जिसमें उत्तराखण्ड के सभी वीर सेनानियों और साहित्यकारों के चित्र और जीवनपरिचय नई पीढ़ी को प्रेरणा देने के लिए स्थापित किए जाएंगे।
तरुण विजय 1975 से पत्रकारिता में सक्रिय हैं। अंग्रेजी एवं हिन्दी की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में नियमित स्तम्भ लेखन। भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पुनः प्रतिष्ठा के वर्तमान संघर्ष में उनकी ओजस्वी लेखनी से निःसृत लेखों ने पाठकों को आंदोलित और प्रेरित किया है। उनकी भाषा शैली और विचार गांभीर्य से पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। यायावार के रुप में देश और विदेश के

प्रायः सभी भागों का भ्रमण कर चुके हैं। दादरा नगर हवेली के जनजातीय क्षेत्र में वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रुप में पांच वर्ष कार्य किया।

केन्द्रीय राजभाषा समिति, केन्द्रीय गृहमंत्री की सलाहकार समिति (1981–1982) एवं रेल शहरी विकास, इस्पात व खान मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य नामांकित हुए। भारत के प्रथम सिन्धु अभियान (14500 फीट तक सिन्धु के भारत में प्रवेश से लेकर निर्गम तक की यात्रा) का नेतृत्व किया। लेह में सिन्धु तट पर सिन्धु दर्शन उत्सव की अभिकल्पना और संयोजना की। लेह में सिन्धु तट पर सिन्धु घाट की वास्तु परिकल्पना और संरचना तथा सिन्धु सभ्यता के पांच हजार वर्षों की यात्रा के संग्रहालय का रुपाकार सृजित किया। चीन के सिचुआन विश्वविद्यालय से भारत चीन संबंधों पर फैलोशिप प्राप्त। चीन, पूर्वी एशिया, यूरोप, अमरीका व अफ्रीका के 32 देशों का भ्रमण और यात्रा वृतांतों का लेखन। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन (आईआईएमसी) की संचालन समिति के दो वर्ष के सदस्य रहे। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की सर्वोच्च निकाय महापरिषद् के सदस्य। भारत–चीन एवं भारत–जापान विशिष्ट जन समिति (विदेश मंत्रालय) के चार वर्ष सदस्य रहे। टाइम्स आफ इण्डिया, दैनिक जागरण, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, नव भारत (रायपुर), विवेक मराठी (मुम्बई), जन्मभूमि मलयालम, विजय कन्नड (कर्नाटक), होसदिगंत कन्नड़ (कर्नाटक), तरुण भारत (नागपुर) आदि में स्तम्भ लेखन।

पुस्तकें –

1. कैलास मानसरोवर यात्रा – साक्षात् शिव से संवाद
   (हिन्दी, अंग्रेजी एवं गुजराती में वृहद् संस्करण तथा एक छोटा हिन्दी बाल संस्करण)
2. भारत का मन
3. युद्ध अभी बाकी है
4. समय का सच
5. सिन्धु गाथा (हिन्दी, अंग्रेजी एवं सिन्धी)
6. पंख लगी पगडंडियां
7. आकाश हमारे सीने में
8. Saffron Surge
9. आकाश हमारे सीने में
10. India Battles to Win
11. **भारत : नियति और संघर्ष**

सम्मानः

1–राजमाता विजया राजे सिंधिया पत्रकारिता सम्मान (2007)

2–प्रज्ञा सम्मान (दिल्ली प्रकाशक संघ)

3–ज्ञानी ज्ञान सिंह पुरस्कार (भाषा विभाग, पंजाब सरकार)

4–पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान (राजस्थान)

5–रोटरी गौरव सम्मान 2001

6–विश्व हिन्दी रत्न सम्मान 2001

संरक्षकः

शहीद भगत सिंह जन्मशताब्दी समारोह समिति, पंजाब

सदस्यः

1–एडिटर्स गिल्ड आफ इण्डिया

2–आथर्स गिल्ड आफ इण्डिया